Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

भारत-चीन प्राचीन सम्बन्ध (व्यापारिक परिप्रेक्ष्य में)

Dr. Parul Tyagi*

Temporary Lecturer, Indraprastha Institute of Education and Management, Hapur, Uttar Pradesh

सार – *वर्तमान की परिस्थितियों में भारत चीन संबंधों का स्वरूप समझना भले ही कठिन सा प्रतीत होता है लेकिन प्राचील समय में दोनो देशों के मध्य जो सम्बन्ध स्थापित थे वे सौहार्द व मधुर थे। दोनो देशों के मध्य जो सम्बन्ध प्राचीन समय में स्थापित हुए थे इनका मुख्य कारण व्यपार था। हेगल के अनुसार, "भारत इतिहास में महत्वकांक्षाओं की धरती के रूप में जाना जाता है।" भारत और चीन के मध्य व्यापारिक जल व स्थल दोनों मार्गो की व्यवस्था थी। लेकिन दोनों मागों की कठिनता के कारण अधिक समय लग जाता था। स्थल मार्ग अधिक पुराना था और बहुधा काम में भी आता था, किन्तु नौ-निर्माण और नाविक कला में विकास से जल मार्ग भी लोकप्रिय हो गया। प्रथम शताब्दी से चौथी शताब्दी के मध्य हिंद चीन में तथा हिंदेशिया के अनेक दीपों में भारतीय उपनिवेशों के हो जाने के कारण चीन से व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ाने में भारत को सुविधा मिली। उत्तर-पश्चिम भारत से मध्य एशिया को जाने वाले बड़े मार्ग द्वारा चीन से यातायात होता था। किन्तु पूर्वी भारत से हिन्दचीन के रास्ते चीन आने-जाने में समय कम लगता था। अतः इस काल में यह दूसरा स्थल मार्ग अधिक प्रयोग किया गया।[1] गुप्तकालीन शासको ने व्यापारिक मार्गो को पहले की अपेक्षा अधिक सुरक्षित बना दिया था। 'रघुवंश' में कालिदास ने लिखा है कि नदियों, वनों तथा पहाड़ो में व्यापारी निर्भय यात्रा कर सकते थे।[2]*

----------X----------

भारत व चीन के मध्य विशेष रूप से रेशम का व्यापार होता था। जिस मार्ग द्वारा रेशम का व्यापार होता था, उसे 'रेशम मार्ग' कहा जाता था। प्रागैतिहासिक काल में रेशम मार्ग पीतल और फर के आदान प्रदान के लिए प्रयोग में लाया जाता था। कुषाण काल में इस मार्ग ने अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।[3]

फन-ये नामक चीनी यात्री जो 5वीं शताब्दी के आरम्भ में भारत आये थे, वे लिखते है, कि उस समय काबुल से लेकर दक्षिण-पश्चिम समुद्र तट तक तथा उनके पूर्व में अनाम तक सारे देश "शिन-तु" (हिंद) में सम्मिलित थे। तामलिप्ति और चंपा के प्रसिद्ध बंदरगाह पूर्वी व्यापार के केन्द्र बने, जिनसे वर्मा, हिंदचीन तथा चीन को जहाज झंडू के झूंड जाने लगे थे।[4]

एक विश्वसनीय साहित्यिक चीनी विवरण के अनुसार भारत का उल्लेख सर्वप्रथम 138 ई.पू. में मिलता है, जब मेधावी साहसी चीनी दूत चांग किएन दूत मंडल के साथ बेक्ट्रिया आया और दस वर्षो तक हुणों की कैद में रहा। जब चांग किएन चैदह वर्ष बाद अपने देश लौटा तो उसने हान सम्राट वू दी (140-87 ई.पू.) को बताया कि जब वह बेक्ट्रिया में था तो उसने वहाँ चीन के दक्षिण-पश्चिम प्रान्त जैजवान से आये हुए बांस की छड़ी और वस्त्र देखें। जब उसने वहाँ के लोगों से इन वस्तुओं के विषय में चर्चा की तो उन्होनें बताया कि ये वस्तुए सैन्डो (भारत में सिन्ध) से लाई गई है। ये वस्तुएं भारत और अफगानिस्तान होती हुई वहाँ पहुँची थी। इस सम्पूर्ण विवरण से यह ज्ञात होता है कि भारत-चीन के मध्य व्यवसायिक सम्बन्ध दूसरी शताब्दी ई.पू. से स्थापित थे।[5]

पान-काउ नामक लेखक द्वारा रचित ग्रंथ " शिन-हान चाउ" से पता चलता है कि दक्षिण भारत का चीन से समुद्री मार्ग द्वारा व्यापारिक सम्बन्ध इस काल में भी जारी रही। इस पुस्तक में लिखा है कि ईसवीं सन के प्रारम्भ में वांग-मेंग नामक चीनी शासक ने कांची के राजा को अपने यहाँ की अनेक मूल्यावान वस्तुऐं भेंट में भेजी, और उनसे प्रार्थना की, कि वह अपने यहाँ से गैंडा चीन भेज दे। चीन में भारतीय गैंडों की मांग बढ़ गई थी।[6]

स्थल मार्ग की सुलभता होते हुए भी व्यापारी स्थल मार्ग का बहुधा कम ही प्रयोग में लाते थे। इसका एक विशष कारण यह था, कि स्थल मार्ग में पड़ने वाले राज्यों एवं देशों में प्रचलित राजनीतिक दशा का व्यापार पर असर पड़ता था, जबकि समुद्री मार्ग जोखिम भरा था। इसके बावजूद व्यापारी इसे ही अधिक प्रयोग में लाते थे।[7]

चीनी जहाजों को समुद्री मार्ग द्वारा भारत पहुँचने में लगभग चार माह का समय लगता था। जहाज प्रायः अक्टूबर में

www.ignited.in

पहुँचते और अप्रैल में चल पड़ते। गुजरात से कोरोमंडल तट पर पांडिचेरी जाते समय रोमन और अरब व्यापारी रेशम और फर खरीदते थे, जो समुद्री मार्ग द्वारा चीन से लाया जाता और भारतीय बंदरगाहों पर उतारा जाता था। भारत पूर्व और पश्चिम से आने वाले सभी जहाजों के मिलने का स्थान था। इसके बंदरगाह फारस, मिस्र, यूनान और रोम के बाजारों के लिए माल से भरे रहते थे। उन दिनों दवाईयों के लिए कुछ निश्चित उत्पादों जैसे कि कपूर, चीनी, इलायची, दालचीनी और काली मिर्च की आवश्यकता पड़ती थी। इत्र निर्माण प्राचीन काल से एक उच्च विकसित उद्योग था, जिसके लिए दालचीनी एक अनिवार्य अंग था। काली मिर्च भोजन और दवाईयों दोनों के लिए इतना महत्वपूर्ण था, कि रोम में इस पर कर नहीं लगता था।

चीन से रेशम के साथ-साथ भारत के पारदर्शी मलमल, जिसे रोमवासी नेबूला नाम से पुकारते थे और एक जंगरोधी भारतीय धातु की रोम में अत्याधिक मांग थी। इन उत्पादों के साथ बहुमूल्य पत्थर, मोती, पन्ना, माणिक, हीरा, स्फुटिक और सबसे ऊपर हाथी दांत भी मांग मे रहे। हाथी, शेर, चीता, भैंसे, तोता और सुन्हरें तीतर आदि भारतीय पशु पक्षी की भी अत्याधिक मांग थी। साहित्यिक स्रोतों के अनुसार भारत से चीन भेजी जाने वाली वस्तुओं में मूंगा, मोती, कांच आदि प्रमुख थे, तथा चीन से भारत आने वाली वस्तुओं में मलमल सर्वश्रेष्ठ था। मूंगा व मोती राजाओं के महल को सजाने के काम में लाये जाते थे, जो बाद में अमीर लोगों में भी लोकप्रिय हो गये थे। चीन सोने तथा रेशम के बदले भारत और रोम से बिनौले का आयात करने लगा, जो कि कश्मीर तथा दक्षिण भारत का उत्पादन था।[8]

तांग, सुंग तथा यूआन राजवंशों से भारत के व्यापारिक सम्बन्ध अत्यधिक सुदृढ़ बन गये थे। इस अवधि में भारत के ज्योतिष, पंचांग, दवाईयां, नृत्य, संगीत, चीनी उत्पादन प्रक्रिया आदि का चीन में प्रवेश हो चुका था। भारत-चीन के मध्य जिन वस्तुओं का व्यापार होता था, उनमें चीनी भी मुख्य थी।[9]

ईसा की आरम्भिक शताब्दियों में भारत-चीन व्यपार अच्छे ढंग से हो रहा था। चीनी रेशम के अतिरिक्त चीनी बर्तन भी भारत में बहुत अधिक पसन्द किये जाते थे। भारतीय वस्त्रों की दक्षिण-पश्चिम चीन में बहुत मांग थी। भारतीय शब्द 'सिन्दूर' और 'कीचक' के लिए चीनी भाषा के शब्द 'चिन तुंग' और 'कि-चोक' भी इन देशों के व्यापारिक संबंधो का संकेत देते है। भारत पांचवी शताब्दी तक चीन को कार्बन-प्रभावी इस्पात का निर्यात करने लगा था। व्यापार की चीजों के साथ विचार भी आयें।[10]

पूर्व मध्यकाल में भी भारत का चीन से व्यापार भी उन्नति पर था। ह्नेनसांग के अनुसार यंग देश (चीन) को भारत में महाचीन कहा जाता था। 749 ई. में एक चीनी अभिलेख में कैंटन नदी के तट पर अन्य देशों के जहाजों के साथ भारतीय जहाजों की कतारों का भी उल्लेख है।[11]

कन्नौज के शासकों हर्षवर्धन एवं यशोवर्मा, कश्मीर नरेश ललितादित्यमुक्तापीड़, पल्ल्व नरसिंहवर्मा द्वितीय, चोल राजराज प्रथम और कुलोतुंग प्रथम आदि ने अपने दूतमंडल चीन भेजे थे। 1094 तथा 1296 ई. में क्वीलन के राजाओं के भी प्रतिनिधिमंडल चीन भेजे गये थे।[12]

विवेच्य काल में चीनी स्रोतों से हमें ज्ञात होता है कि सुंग काल में दक्षिण भारत के बंदरगाहों से नियमित रूप से विभिन्न प्रकार के सूती कपड़े, सिले वस्त्र, गर्म मसालें, औषधियां, हाथीदांत, गैंडे के सींग, अम्रक, आबनूस और सुगंधित द्रव्य चीन को निर्यात किए जाते थे। इस समय भी चीन से भारत आने वाली वस्तुओं में रेशम सर्वप्रमुख था। ह्नेनसांग ने चीन को 'रेशम का देश' कहा है।[13]

मार्कोपोलो के अनुसार भारत - चीन से रेशमी वस्त्रों एवं सोने का आयात करता था।[14] वैजयन्ती में टीन के लिए प्रयुक्त चीनपट्ट शब्द से यह संकेत मिलता है कि इस धातु का भी भारत चीन से थोड़ी बहुत मात्रा में व्यापार करता था।[15]

भारत और चीन के मध्य जो सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित हुए थे, उसमें दोनों देशों के व्यापारियों ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत-चीन सम्बन्धों का आधार भले ही इस अवधि मे सांस्कृतिक रहा हो, परन्तु इसकी नींव व्यापारिक सम्बन्धों पर ही स्थिर थी। व्यापार में वस्तुओं के साथ-साथ विचारों का भी आदान-प्रदान हुआ, जिसनें दोनों देशों की दूरियों को काफी हद तक दूर कर दिया था। दो महान संस्कृति के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने का श्रेय व्यापार को जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कॉमर्स बिटविन इण्डिया एण्ड रोमन एम्पायर - वार्मिंग्टन, भाग 2, 1928 - विस्तृत विवरण

2. "वापीष्विय स्रवन्तीषु वनेषूपवनेष्विय ।

सार्थाः स्वैरं स्कि स्वकीयेषु चेरूर्वेपूमास्विवाहिषु ।"
रघुवंश - कालिदास - 17, 64

www.ignited.in

3. हिस्ट्री ऑफ़ सिविलाइजेशन ऑफ़ सेन्ट्रल एशिया - जेनोस हरमत्ता, को-एडिटर ए. आर. मुखामदजेनव, वॉल्यूम 2, 1994 - पृ0सं0 287 इण्डिया-चाइना रिलेशनशिप इन दि फस्ट हाफ ऑफ़ दि 20 सेन्चूरी - पूर्वोक्त - पृ.सं. 3

4. कॉमर्स इंस्क्रिप्शन इंडिकेरम - फ्लीट, जिल्द 3, कलकत्ता, 1888 7 पृ.सं. 70-71

5. इण्डिया-चाइना रिलेशनशिप इन दि फस्ट हाफ ऑफ़ दि 20 सेन्चूरी - बी. आर. दीपक, 2001 – पृ.सं. 2-3

6. कॉमर्स बिटविन इण्डिया एण्ड रोमन एम्पायर - पूर्वोक्त - विस्तृत विवरण

7. आर्केलोजिकल सर्वे ऑफ़ इण्डिया, दि स्पाइसी एण्ड दि सिल्करूट - अनिल डी सिल्वा, विवेकानन्द कोमीमोरेशन, वॉल्यूम (इण्डिया कॉन्ट्रीब्यूशन टू वर्ल्ड थॉट एण्ड कल्चर), 1970 – पृ.सं. 299

8. इण्डिया-चाइना रिलेशनशिप इन दि फस्ट हाफ ऑफ़ दि 20 सेन्चूरी - पूर्वोक्त - पृ.सं. 3

9. उपर्युक्त - पृ.सं. 4-5

10. दि वे एण्ड इट्स पावर - आर्थर वेली, लन्दन, 1934 – पृ. सं. 116

11. फोरेन नोटिसेज ऑफ़ साउथ इण्डिया - नीलकंठ शास्त्री, मद्रास, 1930 – पृ.सं. 19

12. कूवलयमाला - भाग 1 – पृ.सं. 66

13. सी-यू-की, बुद्धिस्ट रिर्काडस ऑफ़ दि वेस्टर्न वर्ल्ड - एस0 बिल, वाल्यूम 2 - लन्दन, 1906 – पृ.सं. 319

14. समराइच्चकहा, एक सांस्कृतिक अध्ययन, झिनकू यादव - पृ.सं. 169

15. कॉमर्स बिटविन इण्डिया एण्ड रोमन एम्पायर - पूर्वोक्त - विस्तृत विवरणकॉमर्स इंस्क्रिप्शन इंडिकेरम - फ्लीट, जिल्द 3, कलकत्ता, 1888 7 पृ.सं. 70-71

Corresponding Author

Dr. Parul Tyagi*

Temporary Lecturer, Indraprastha Institute of Education and Management, Hapur, Uttar Pradesh

tyagi.pearl@gmail.com